प्रदूषण

बढ़ रहा है प्रदूषण
घट रहा है जीवन का क्षण
सब कुछ है हाथ में हमारे
हम भोगी हैं हम ही कारण।

बढ़ रहा है प्रदूषण
वायु दूषित अब जहर समान
जल दूषित अब विनाशक
प्रदूषण है रोगों का कारण।

धरती हरी है तो जीवन खुशहाल
वृक्षों से करना है इसका श्रंगार
शुद्ध पर्यावरण है तो जीवन खुशहाल
प्रदूषण है कष्टों का आवाहन।

अनिल कुमार, "अवर श्रेणी लिपिक"